

Q.3. केन्स के ब्याज सिद्धान्त की व्याख्या कीजिये। इस सिद्धान्त में कौन-सी त्रुटियाँ हैं? (*Explain the Keynesian theory of interest. What are the shortcomings of this theory?*)

Or, "ब्याज की दर तरलता से वंचित होने का पुरस्कार है।" व्याख्या करें।
(*"The rate of interest is the price for parting with liquidity." Discuss.*)

Or, केन्स के ब्याज सिद्धान्त अथवा तरलता पसन्दगी के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये। (*Critically examine the Keynesian theory of interest or liquidity preference theory of interest.*)

Or, "ब्याज विशुद्ध रूप में एक मौद्रिक घटना है।" व्याख्या करें।
(*"Interest is purely a monetary phenomenon." Discuss.*)

Ans. इस सिद्धान्त का प्रतिपादन कीन्स ने किया। उनके अनुसार ब्याज-दर बचत अथवा उधार देने योग्य कोष की माँग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित नहीं होती है, बल्कि मुद्रा की मात्रा तथा तरलता पसन्दगी द्वारा निर्धारित होती है। कीन्स के अनुसार, "ब्याज वह कीमत है जो धन को नकद रूप में रखने की इच्छा तथा उपलब्ध नकदी की मात्रा में बराबरी स्थापित करती है।" इस प्रकार ब्याज बचत का पुरस्कार न होकर तरलता को परित्याग करने का पुरस्कार है। कीन्स के शब्दों में, "ब्याज एक निश्चित समय के लिए तरलता का परित्याग करने का पारितोषिक है।" कीन्स के अनुसार, "ब्याज एक विशुद्ध मौद्रिक घटना है", क्योंकि इसका निर्धारण मुद्रा की माँग व पूर्ति द्वारा होता है। द्रव्य की माँग का अर्थ लोगों की द्रव्य को नकद रूप (तरल रूप) में रखने के लिए माँग से है अर्थात् लोग तरल रूप में रखने के लिये मुद्रा की कितनी माँग करते हैं। द्रव्य की पूर्ति का तात्पर्य किसी समय विशेष पर उपलब्ध द्रव्य की मात्रा से है। ब्याज दर द्रव्य की माँग एवं पूर्ति के साम्य बिन्दु पर निर्धारित होती है।

नकदी अधिमान अथवा मुद्रा की माँग- नकदी अधिमान का तात्पर्य धन को नकद रूप में रखने के लिए प्राथमिकता देने से है। कीन्स ने मुद्रा की माँग के लिए तरलता अधिमान शब्द का प्रयोग किया है। तरलता अधिमान का तात्पर्य मुद्रा को नकदी के रूप में रखने की इच्छा है। कीन्स के अनुसार लोग तीन उद्देश्यों से अपने पास मुद्रा तरल रूप में रखना चाहते हैं-

(1) कार्य सम्पादन उद्देश्य- आय की प्राप्ति एवं उसके व्यय के मध्य समय का काफी अंतराल रहता है। इसलिए व्यक्तियों को अपनी आय के कुछ भाग को तरल (नकदी) रूप में अपने पास संचित रखने की आवश्यकता रहती है, जिससे वे अपने दैनिक लेन-देन की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

इसी तरह उत्पादक व विक्रेता भी कच्चे माल, यातायात लागत, मजदूरी आदि पर व्यय करने के लिए अपने पास नकदी रखते हैं। लेन-देन के उद्देश्य से रखी जाने वाली नकदी पर आय-स्तर का प्रभाव पड़ता है। यह ब्याज दर से प्रभावित नहीं होती है। इसे समीकरण रूप में निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है- $M_1 = f(y)$

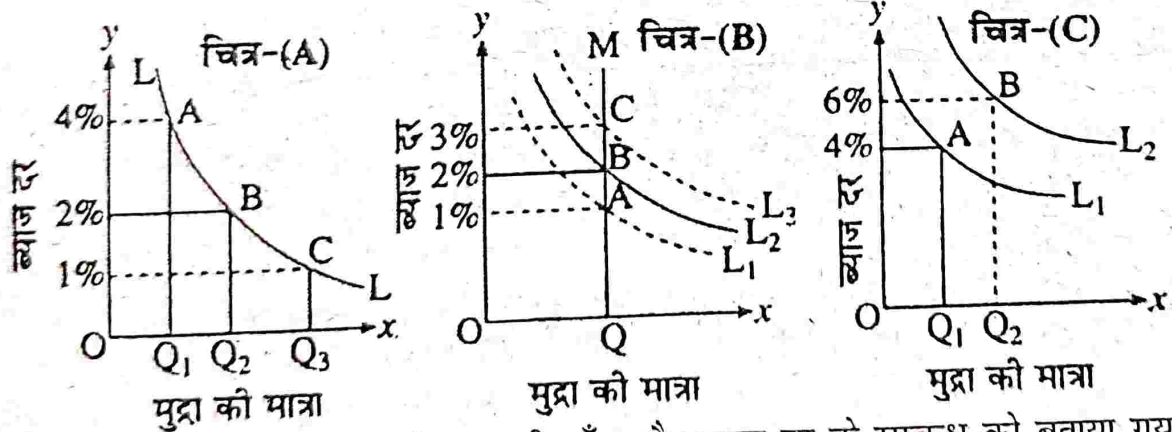
(2) दूरदर्शिता का उद्देश्य- लोग भविष्य की अनिश्चितता एवं संकटों के लिये अपने पास तरल रूप में द्रव्य रखना चाहते हैं। उन्हें कभी भी आकस्मिक व्यय करने पड़ सकते हैं; जैसे-बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु इत्यादि। दूरदर्शिता अथवा सतर्कता उद्देश्य के लिये नकदी की माँग लोगों की प्रकृति तथा उनके रहने की दशाओं पर निर्भर करती है। इस उद्देश्य के लिये नकद द्रव्य की मात्रा सामान्य रूप से ब्याज दर को प्रभावित नहीं करती है।

(3) सट्टे का उद्देश्य- कीन्स के अनुसार कुछ लोग बाजार में ब्याज दर के परिवर्तनों का लाभ उठाने के लिए भी अपने पास नकद राशि रखना पसन्द करते हैं जिसे वह सट्टे का उद्देश्य बताता है।

सट्टे का अभिप्राय अनिश्चितता से लाभ प्राप्त करना है। जब ब्याज दर नीची रहती है तो लोग द्रव्य को तरल रूप में अपने पास इस आशा से रखते हैं कि भविष्य में ब्याज दर बढ़ जाने पर उन्हें ऊँची ब्याज दर प्राप्त होगी। यदि ब्याज दर ऊँची है तो लोग द्रव्य को नकद रूप में कम मात्रा में रखेंगे क्योंकि भविष्य में ब्याज दर के कम होने की आशा रहती है। इस प्रकार सट्टा उद्देश्य के लिए नकदी की माँग ब्याज दर पर निर्भर होती है तथा इसमें बहुत अधिक परिवर्तन होता रहता है।

कीन्स के अनुसार मुद्रा की कुल माँग कार्य सम्पादन उद्देश्य, दूरदर्शिता उद्देश्य तथा सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की माँग का योग है। यदि मुद्रा की कुल माँग को M_d द्वारा, कार्य सम्पादन एवं दूरदर्शिता उद्देश्य दोनों को M_1 तथा सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की माँग को M_2 द्वारा व्यक्त करें तो द्रव्य की कुल माँग को निम्न प्रकार लिखेंगे- $M_d = M_1 + M_2$ । यहाँ M_1 आय के स्तर पर निर्भर करता है जबकि M_2 ब्याज की दर पर। कीन्स के अनुसार प्रथम दो उद्देश्यों के लिये मुद्रा की माँग M_1 स्थिर रहती है। अतः यह ब्याज दर को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं करती है। मुद्रा की सट्टा माँग (M_2) व ब्याज की दर (r) में विपरीत सम्बन्ध होता है। यथा- $M_2 = f(r)$ । सट्टा उद्देश्य के लिये मुद्रा की माँग M_2 बदलती रहती है इसलिये यह ब्याज दर को प्रभावित करती है। इस प्रकार ब्याज दर में परिवर्तन का प्रमुख कारण सट्टे के लिये मुद्रा की माँग है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण- कीन्स के शब्दों में ब्याज दर का निर्धारण उस बिन्दु पर होगा जहाँ द्रव्य की मात्रा व द्रव्य को तरल रूप में रखने की इच्छा के मध्य सन्तुलन स्थापित होगा। इसे हम निम्न रेखाचित्रों की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं-



उपर्युक्त रेखाचित्र (A) में मुद्रा की माँग और ब्याज दर के सम्बन्ध को बताया गया है। LL मुद्रा की माँग वक्र है। ब्याज दर 2% होने पर मुद्रा की माँग OQ_2 है। ब्याज दर बढ़कर 4% होने पर मुद्रा की माँग घटकर OQ_1 रह जाती है। इसी प्रकार ब्याज दर घटकर 1% होने पर मुद्रा की माँग बढ़कर OQ_3 हो जाती है। इस प्रकार मुद्रा की मात्रा व ब्याज दर में विपरीत सम्बन्ध होता है।

चित्र (B) में मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के सन्तुलन द्वारा ब्याज दर निर्धारण को स्पष्ट किया गया है। L_1, L_2 व L_3 मुद्रा के माँग वक्र हैं तथा MQ पूर्ति वक्र है। मुद्रा की पूर्ति स्थिर किया गया है। L_1, L_2 व L_3 मुद्रा के माँग वक्र हैं तथा MQ पूर्ति वक्र है। मुद्रा की पूर्ति स्थिर रहती है। अतः मुद्रा की माँग में परिवर्तन होने पर ब्याज दर में भी परिवर्तन होता है। मुद्रा की माँग L_1 से L_2 व L_3 होने पर ब्याज दर 1% से बढ़कर 2% व 3% हो जाती है।

व पूर्ति के सन्तुलन L, B व A बिन्दुओं पर है।

चित्र (C) मुद्रा की माँग एवं पूर्ति दोनों में परिवर्तन होने पर नये सन्तुलन को दर्शाता है। प्रारम्भिक सन्तुलन A पर है जहाँ ब्याज दर 4% तथा मुद्रा की मात्रा OQ_1 है। माँग व पूर्ति दोनों बढ़ने पर सन्तुलन B बिन्दु पर होगा जहाँ मुद्रा की मात्रा OQ_2 तथा ब्याज दर 6% है।

कीन्स के सिद्धान्त का महत्त्व एवं मूल्यांकन

यद्यपि कीन्स के ब्याज सिद्धान्त की आलोचनाएँ हुई हैं फिर भी इस सिद्धान्त ने आर्थिक विचारकों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया और आर्थिक जटिलताओं के विश्लेषण में व्यावहारिक सिद्धान्त है। निम्न कारणों से इस सिद्धान्त को व्यावहारिक माना जा सकता है—

- (1) यह अधिक व्यापक एवं व्यावहारिक विश्लेषण है।
- (2) यह उत्पादक, अनुत्पादक सभी ऋणों के सम्बन्ध में लागू होता है।
- (3) मुद्रा के महत्त्व को स्पष्ट कर दिया कि देशों में आय एवं रोजगार निर्धारण में मुद्रा एक महत्वपूर्ण घटक है, मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम नहीं संचय का साधन भी है।
- (4) मौद्रिक नीति का व्यावहारिक दृष्टिकोण इस सिद्धान्त में निहित है। कीन्स ने अपने इस सिद्धान्त के आधार पर ही अर्थव्यवस्था में स्थायित्व, विकास व नियन्त्रण के लिए मौद्रिक नीति का व्यावहारिक हथियार प्रदान किया।
- (5) बचत और निवेशों में सन्तुलन का स्पष्टीकरण भी कीन्स ने इस सिद्धान्त के माध्यम से किया। कीन्स ने बताया कि बचत और निवेश में सन्तुलन ब्याज दर से नहीं होता बल्कि आय के स्तर में होने वाले परिवर्तनों से होता है।
- (6) यदि कीन्स ने तरलता पसन्दगी सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया होता तो उसके रोजगार तथा आय सिद्धान्त अधूरे ही रह जाते क्योंकि दोनों इसी पर आधारित हैं।